चण्डीगढ़। ब्रह्माकुमारी संस्थान की 80वीं वर्षगांठ, ब्र.कु. अचल दीदी के तृतीय स्मृति दिवस एवं ब्रह्माकुमारी संस्था के पंजाब ज़ोन की वरिष्ठ बहनों के सम्मान समारोह में मलेशिया की ब्र.कु.मीरा, ब्र.कु.शुक्ला, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.करूणा, कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, ग्लोबल अस्पताल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, ब्र.कु.भूपाल, ब्र.कु.विजया, ब्र.कु.अमीरचंद, पूर्व जस्टिस ए.एन.जिंदल, मेयर आशा जसवाल, पूर्व मेयर हारजिंदर कौर तथा अन्य।

गुवाहाटी-असम। राज भवन में ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् राज्यपाल महोदय प्रो.जगदीश मुखी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु.रेखा, ब्र.कु.विनोद तथा ब्र.कु.विजय।

कटक-ओडिशा। श्रीमद्भगवद् गीता महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, जस्टिस वी. ईश्वरैय्या, ब्र.कु.कमलेश, डॉ.पुष्पा पाण्डे, ए.डी.एम. रघुराम अय्यर, ब्र.कु.नथमल तथा प्रो. डॉ.कृपासिंधु पण्डा तथा अन्य।

मोहाली-पंजाब। टायनोर आर्थोटिक्स प्रा.लिमि. कम्पनी में 'स्व-प्रबंधन' विषय पर कंपनी के एक्ज़ीक्युटिव्स को सम्बोधित करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.मीरा,मलेशिया।

नॉर्थ कैलिफोर्निया। दिवाली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.चन्द्रु, जर्नलिस्ट जिम पेमार तथा धार्मिक नेता मार्च नोगुचि।

पलवल-हरियाणा। ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् दक्षिण हरियाणा बिजली निगम के एस.डी.ओ. अशोक कुमार शर्मा व सुनीता शर्मा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु.सुदेश।

'तलाश' खोए हुए संसार की

जीवन में कितनी चीज़ें खो जाती हैं, रास्ते, लोग, बातें, अनुभव.... खोई चीज़ों का कितना बड़ा संसार हमारे अवचेतन में होता है। इस खोने को लेकर अक्सर लोगों में बड़ी ही निराशा का बोध पाया जाता है। जबकि जीवन का सत्य यह है कि चीज़ें छूटती ही हैं, खोती ही हैं। यह जीवन और प्रकृति का अनिवार्य नियम है, पर उतना ही बड़ा सत्य यह भी है कि यह खोया हुआ संसार हमारी स्मृतियों में और हमारे अवचेतन में हमेशा मौजूद रहता है, बल्कि कहीं बड़ा और गहरा होकर। जो कुछ भी हम जी आए हैं वह रूप बदलकर हमारे आंतरिक जीवन में संचित रहता है, यह संचित संसार ही हमें बनाता और बिगाड़ता है। हमारी दिशाओं को तय करता है। हमारे मन के विकास को प्रभावित करता है। यह एक संपत्ति है, एक थाती है। इसलिए खोए हुए को अपने भीतर बार-बार तलाशना चाहिए। यह तलाश ही हमें हमारे जिए गए जीवन का मर्म बताती है। उसके नए रूप बनते जाते हैं, नए अर्थ खुलते जाते हैं। अतीत नई छवियां ग्रहण करता है। हाँ, भीतर की इस दुनिया को लेकर लोग प्राय: न तो संवेदनशील होते हैं और न ही सजग। अपने भीतर जाने का मतलब लोग किसी शून्य में खो जाना समझते हैं, जबकि भीतर जाने का मतलब है कि हम जिन चीज़ों को खो आए हैं, उनकी नई तलाश करें, उनसे नए रिश्ते बनाएं। यह हमारे अस्तित्व को बदल सकता है, उसे नए अर्थ और गहराइयाँ दे सकता है। इसलिए जो खोया है वह बहुत कीमती है, क्योंकि वह पूरी तरह अभी भी नहीं खोया।

कठिनाई और अवरोध वह देशी मिट्टी है, जिससे पराक्रम और सफलता का विकास होता है। - जॉन नेल

रे मन, तू काहे को डोले रे?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जिनसे सहानुभूति की आशा हो, वे भी यदि साथ छोड़ दें और मुख मोड़ लें; जिनसे यह अपेक्षा हो कि वे बात सुनेंगे और कुछ राहत देंगे, यदि वे भी कहें कि उनके पास समय ही नहीं है; जिनसे उम्मीद हो कि प्यार करेंगे और दुलार देंगे और कहेंगे कि 'तुम अच्छे हो', यदि वे ही कहें कि 'तुम गलत हो, खराब हो, निकम्मे और बेकार हो' तो क्या मन थाली के बैंगन की तरह लुढ़क जाए या बे-पेंदी के लोटे की तरह डोल जाए और लुढ़कते-लुढ़कते गंदले पानी के गड्ढों में जा गिरे? शूरवीर तो ज़िन्दगी को हथेली पर रख कर और सिर पर कफन बांधकर मैदाने-जंग में जाते हैं, पहलवान भी कुश्ती को जीत-हार की बाजी मान कर अखाड़े में उतरते हैं, घोड़े सवार भी घोड़े की तेज दौड़ से निडर होकर उस पर चढ़ते हैं, छातादार फौजी मृत्यु से अभय होकर पैराशूट लेकर हवाई जहाज से कूदते हैं, तो क्या स्वराज्य प्राप्त करने का इरादा रखने वाले मक्खी से भी डरते हैं, चूहे से भी घबराते हैं और थोड़ी-सी आहट होने पर भी चोर के भय से काँप उठते हैं!! जब मन ने सोच लिया कि मंज़िल ऊँची है, राह फिसलनी है, हवा तेज़ है, बर्फ की वर्षा होने की भी संभावना है, अन्धेरा और आँधी दोनों भी आकर घेरेंगे, तब भी पर्वतारोही चुनौती को स्वीकार कर के चल पड़ता है और मज़बूत कदम से चढ़ता ही जाता है। उसके कान में कोई कह रहा लगता है - ''तू चल अकेला, तू चल अकेला... तेरा पीछे रह गया मेला, साथी रे, तू चल अकेला.....!'' परन्तु वह मन को मज़बूत करके चलता जाता है, आगे बढ़ता जाता है, पहाड़ की ऊँचाइयों पर चढ़ता जाता है। यदि रास्ते में ही उसका मन डोल जाये तो वह स्वयं भी डोलते और लुढ़कते हुए गगन-चुम्बी चोटी से गिर कर चट्टान पर ऐसी बुरी तरह चकनाचूर हो

जायेगा कि हड्डी-पसली और असली-नकली का भी पता नहीं चलेगा। **इसी प्रकार, 'यह राह रूहानी भी बड़ी तूफानी है; कहीं पहाड़, कहीं पानी है; दुनिया सारी बेगानी है, परन्तु हमने भी मन में यह बात ठानी है कि, बुढ़ापा है या जवानी है परन्तु स्थिति बड़ी मस्तानी है, मंज़िल बड़ी सुहानी है।'**

'हमने जिस पर भी अहसान किया, रात-दिन कुर्बान किया, दोस्ती का ऐलान किया, मान किया, सम्मान किया, पर जब उसको हाल बयान किया, ज़रा भी नहीं नुकसान किया, उसने भी बन्द-कान किया!'

'पर मन, तू डोले क्यों है? दुनिया खुद डोल रही है, शुक्रिया की बजाय कर मखौल रही है, झूठा-मूठा बोल रही है, मेहरबानी का पीट ढ़ोल रही है, बे-वफाई का रोल कर रही है, अब इसमें केवल पोल रही है, बस ढ़ोल से वही बोल रही है।'

इसलिए रे मन, तू मत डोले रे! तू प्रभु का हो ले रे! पिया-पिया बोले रे! तू मेरेपन को खो ले रे। तू ज्ञान-साबुन से धो ले रे। जो होता है सो सह ले रे।'

'तू अपनी राह पर चलता चल; निंदा-स्तुति, मान-अपमान, हार-जीत, प्यार-तिरस्कार के झकझोलों में, डांट-डपट के धूप-छांव और कंटककीर्ण के रोलों में, नेजे-भाले, तलवार-ताप हथगोलों में, तू रुक मत, तू चलता चल!

क्षण-क्षण, पल-पल, एक भरोसे एक बल, तू प्रभु के सहारे चलता-चल, संभल-संभल, मत फिसल, मज़बूती से, महानता की गली में बढ़ता चल, तू बढ़ता चल! रे मन, तू काहे डोले? तू प्रभु का हो ले!'

दिल्ली-सीताराम बाज़ार। दिवाली पर्व के शुभ अवसर पर मेयर प्रीति अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुनीता।

गया-बिहार। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शीला, डॉ.विनोद कुमार सिंह, बिज़नेसमैन रंजीत सिंह तथा डॉ.राजबंश सिंह।

इंदौर। डी.आई.जी. हरिनारायण मिश्र के साथ आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु.नारायण तथा ब्र.कु.किरण।